International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 04, No. 01(III), January - March, 2022, pp.141-149

उत्तराखण्ड राज्य के कुमाऊँ मण्डल के नैनीताल जनपद में एवं गढ़वाल मण्डल के पौड़ी जनपद में स्थित कॉर्बेट नेशनल पार्क

डॉ. लक्ष्मी देवी*

सार

जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क को भारत में बाघों का स्वर्ग कहा जा सकता हैं। जिम कॉर्बेट पार्क का क्षेत्रफल 520.82 वर्ग किमी (1318 वर्ग किमी कॉर्बेट नेशनल पार्क जिसमें सोननदी वन्य जीव अभयारण्य भी शामिल हैं) पार्क का नाम पौराणिक बाघ शिकारी प्रकृतिवादी जिम कॉर्बेट ब्रिटिश शिकारी 1875–1955 के नाम पर रखा गया हैं। जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क रामगंगा नदी के किनारे और हिमालय पर्वत की तलहटी में उत्तराखण्ड के नैनीताल जिले में स्थित हैं। जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान रॉयल बंगाल टाइगर की लुप्तप्राय प्रजातियां के लिए जाना जाता हैं।

शब्दकोश: *जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क, वन्य जीव अभयारण्य, सामाजिक संस्कृति, भगर्भिक संरचना।*

प्रस्तावना

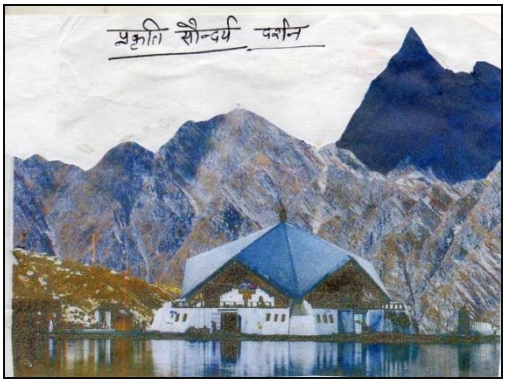

* असिसटेन्ट प्रोफेसर, राधेहरि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, काशीपुर, उत्तराखण्ड।

इस भाग को गढ़वाल या कुँमायू हिमालय तथा उत्तर प्रदेशीय हिमालय क्षेत्र भी कहा जाता हैं। प्रकृति की अमूल्य कृति हिमालय की गोद में बसा उत्तराखण्ड ऐसी देवभूमि हैं जहॉ पुरातन काल से देवगण ऋषिमुनि आदि का निवास स्थान एवं तपोभूमि रहा हैं। यह राजा भरत की जन्मस्थली रहा हैं। इसी स्थल को पुराणों में मानस केदारखण्ड एवं कुर्मांचल नाम दिया गया हैं। ऐतिहासिक वा पौराणिक स्थल प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर हैं। यह क्षेत्र सामाजिक संस्कृति का वाहक रहा हैं। पुरातात्विक खोंजो के अनुसार गढ़वाल एवं कुमायूँ पूर्व में मौर्य साम्राज्य का अंग था। उत्तराखण्ड की सीमाऐं हिमांचल प्रदेश, चीन, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, तिब्बत, नेपाल, अन्तराष्ट्रीय सीमा, चीन, नेपाल से मिली हुई हैं। उत्तराखण्ड को दो मण्डल में विभाजित किया गया हैं गढ़वाल मण्डल में 6 जनपद, कुमायूँ में 7 जनपद हैं।

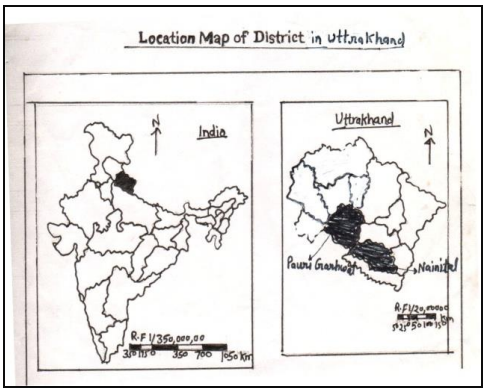

भौगोलिक स्थिति

9 नवम्बर सन् 2000 को स्वतंत्र राज्य के रुप में अस्तित्व में आया। उत्तराखण्ड की भौगोलिक स्थिति इस प्रकार हैं– 18^0 53′ 50′′ उत्तरी अक्षांश से 31^0 27′ 50′′ उत्तरी अक्षांश तथा 77^0 34′ 27′′ पूर्वी देशान्तर से 31^0 02′ 22′′ पूर्वी देशान्तर तक। भारत के उत्तरी सीमान्त क्षेत्र का अधिकांश भाग पर्वतीय क्षेत्र हैं। इसकी अन्तराष्ट्रीय सीमा तिब्बत तथा नेपाल से लगी हुई हैं। पूरब में काली नदी के पश्चिमी तट से प्रारम्भ होकर पश्चिमी में टोंस नदी के पूर्वी तट तक उत्तर में तिब्बत के दक्षिणी ढ़ालों से लेकर दक्षिण में शिवालिक तक हैं।

तिब्बत और नेपाल की सीमा से लगने वाली अन्तराष्ट्रीय सीमा ने इस भू–भाग को सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण तथा सामायिक दृष्टि से संवेदनशील बना दिया हैं।

संक्षिप्त परिचय

जनसंख्या की दृष्टि से आज का उत्तराखण्ड देश का 17वॉ राज्य हैं। उत्तराखण्ड के तरह जिले हैं दो नये जिले बनने वाले हैं। दो मण्डल हैं। देश का 27वॉ राज्य हैं। प्रदेश का राज्यपुष्प– ब्रहम कमल, राज्यपशु कस्तुरी मृग, राज्यवृक्ष वुरॉस तथा राज्यपक्षी मोनाल हैं।

राजकीय भाषा

प्रथम हिन्दी, द्वितीय संस्कृत (जनवरी 2010 से उत्तराखण्ड में 49 तहसीलें हैं तथा उत्तराखण्ड का क्षेत्रफल 53,844 वर्ग किमी हैं।

धरातलीय स्वरुप

उत्तराखण्ड का लगभग 87 प्रतिशत भाग पर्वतीय हैं। भगर्भिक संरचना, धरातल विन्यास की विविद्यता नदी घाटियॉ, पर्वत शिखरों की छटा ने इसके धरातल की छटा को निखारा हैं। धरातल की दृष्टि से इसे निम्न तीन भागों में बांटा जा सकता हैं :

- **हिमाद्रिया महान हिमालयः–** इस क्षेत्र की औसत चौड़ाई 50 किमी तथा धरातल से औसत ऊँचाई 4,500 से 6000 मी0 तक हैं।
- **हिमाचल या निम्न हिमालयः–** औसत चौड़ाई 75 किमी हैं इस भाग की औसत ऊँचाई 1500 से 2700 मी0 मध्य हैं।
- **शिवालिक या वाहय हिमालयः–** इस भाग की औसत ऊँचाई 750 से 1200 मी0 के मध्य हैं।

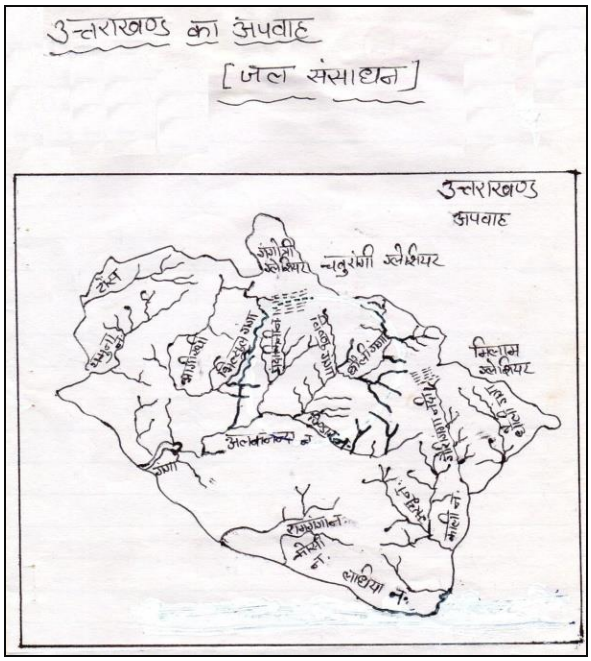

अपवाह

उत्तराखण्ड में अनेक नदियॉ और नदिकायें हैं। इन्हे स्थानीय भाषा में गाड कहते हैं। नदियों के अतिरिक्त झीलें अथवा ताल भी यहॉ बहुत हैं। गंगा एवं यमुना प्रमुख नदियॉ हैं जो गोमुखी एवं यमुनोत्री से निकलती हैं। इसके अलावा अन्य नदियॉ। टोंस, रामगंगा, कोसी तथा काली विशेष उल्लेखनीय हैं यहॉ की नदियों के अपवाह को तीन भागों में बांटा जा सकता हैं :

- **गंगा नदी क्रमः–** उत्तराखण्ड की प्रमुख गंगा नदी का क्रम अधिकांश भाग को घेरे हुये हैं। भागीरथी, अलकनन्दा, जान्हवी आदि नदियॉ इस क्रम में आती हैं। अलकनन्दा की प्रमुख सहायक नदियॉ मन्दाकिनी, पिण्डार तथा धौली गंगा हैं।
- **यमुना नदी क्रमः–** यमुना नदी क्रम में प्रमुख यमुना नदी हैं। जो यमुनोत्री हिमालय से निकली हैं। टोंस यमुना की सबसे प्रधान सहायक नदी हैं।
- **काली नदी क्रमः–** उत्तराखण्ड में यह क्रम पिथौरागढ़, अल्मोड़ा तथा नैनीताल के पूर्वी भाग में पाया जाता हैं। यहॉ क्षेत्र में झाली पानी व कूठी यांक्टी नामक दो शीर्ष धारायें हैं। काली नदी की अन्य सहायक नदियॉ लोहावती एवं लधिया हैं। रामगंगा, कोसी तथा गोला अन्य सहायक नदियॉ हैं।

जलवायु

जलवायु की दृष्टि से यह प्रदेश पश्चिमी हिमांचल प्रदेश की अपेक्षा अधिक आर्द्र तथा गर्म रहता हैं। ग्रीष्म काल में यहॉ निम्न प्रदेश तथा घाटियों में गर्म नम उष्ण जलवायु मिलती हैं। जबकि घाटियों से कुछ 100 किमी दूर अनेक ऐसे पर्वतीय क्षेत्र मिलते हैं। जो हमेशा हिम से ढके होते हैं। शीत ऋतु में तो राज्य के विभिन्न स्थानों का तापमान शून्य से नीचे भी चला जाता हैं। ग्रीष्म ऋतु में तापमान 16^0 से 21^0 सेग्रे0 तक पहुॅच जाता हैं। राज्य की जलवायु का अध्ययन ऋतुओं के आधार पर किया जाता हैं उत्तराखण्ड में धरातलीय रचना के अनुरुप ही जलवायु की दशाऍ पाई जाती है, जो निम्न हैं।

ग्रीष्म ऋतु (मध्य मार्च से मध्य जून)

वर्षा ऋतु (मध्य जून से मध्य अक्टूबर)

शीत ऋतु (मध्य अक्टूबर से मध्य मार्च)

वर्षा

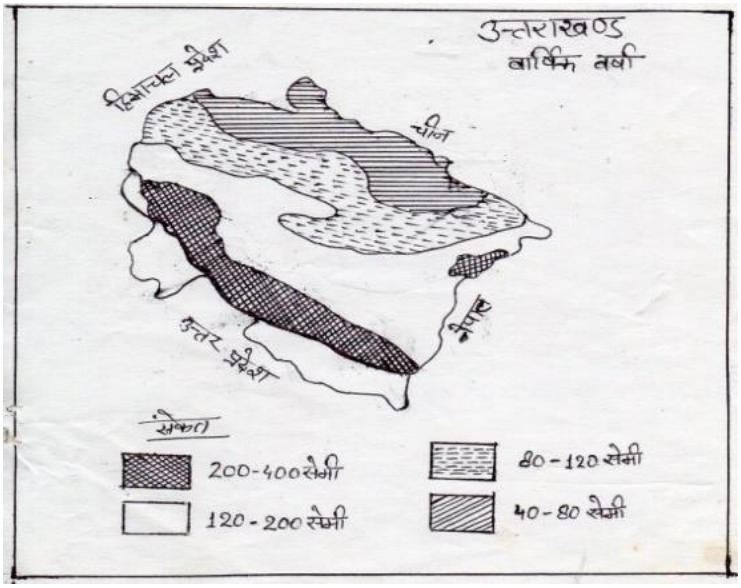

उत्तराखण्ड के वार्षिक वर्षा का वितरण

स्थान	वर्षा (सेमी)	स्थान	वर्षा (सेमी)
नरेन्द्र नगर	318.0	नैनीताल	165.0
मसूरी	242.5	अल्मोड़ा	136.6
देहरादून	212.0	श्रीनगर	93.0
कोटद्वार	180.0	टिहरी	80.0

कृषि

उत्तराखण्ड में कृषि यहॉ का महत्वपूर्ण आर्थिक आधार हैं। यहॉ पर मुख्य रुप से खरीफ, रबी एवं जायद की फसले होती हैं। खरीफ वर्षा ऋतु की फसल हैं (जुलाई से सितम्बर–अक्टूबर तक)।

धान, मक्का, ज्वार–बाजरा, ऊड़द, मूंग आदि पैदा होती हैं। रबी (नवम्बर से मार्च–अप्रैल तक) गेंहू, जौ, चना, मटर, आलू, सरसों आदि तथा जायद (फरवरी–मार्च से अप्रैल–मई) खरबूज, तरबूज, ककड़ी, खीरा, कद्दू, लौकी, करेला, भिन्डी आदि पैदावार की जाती हैं। चावल यहॉ कि प्रमुख पैदावार हैं। फलों में – सेब, आडू, आम, लीची, माल्टा, अखरोट, काफल आदि पर्याप्त होते हैं।

धर्म एवं संस्कृति

उत्तराखण्ड राज्य मुख्य हिन्दू बहुल राज्य हैं। हिन्दुओं के साथ मुस्लिम, ईसाई, सिख, जैन और बौद्ध धर्मावलम्बी भी यहॉ पर्याप्त संख्या में निवास करते हैं। सभी धर्मों के अपने–अपने मन्दिर, मस्जिद, गिरजे, गुरुद्वारें यहॉ हैं। कुछ यहॉ पर बौद्ध मठ भी हैं। सभी धर्मों को यहॉ के समाज में समान दृष्टि और आदर के साथ देखा जाता हैं। विभिन्न धर्मो के लोग यहॉ आपस में मिलजुल कर धार्मिक समारोह, पूजा–यात्राओं, पर्वो–त्यौहारों एवं मेलों में सम्मिलित रहते हैं। साम्प्रदायिक सद्भाव और एकता की दृष्टि से यह प्रदेश एक आदर्श स्थापित करता हैं। केवल उत्तराखण्ड राज्य ऐसा है कि यहॉ कि सांस्कृतिक रीति–रिवाज, नृत्य आज बर्तमान में भी जिन्दा हैं।

जातिय विवरण

उत्तराखण्ड राज्य में प्रमुख हिन्दू–जातियॉ ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा कुछ वैश्य हैं। इसके अतिरिक्त कुछ प्रतिशत हरिजन : अनुसूचित जाति एवं जनजातियों का हैं। यहॉ पर मुसलमान, सिख और ईसाई भी पर्याप्त संख्या में हैं।

प्राकृतिक वनस्पति

उत्तराखण्ड का एक बड़ा भाग जंगलो से घिरा हुआ हैं। पौधों के जीवन पर ऊँचाई, धूप, वायु के प्रभाव में स्थिति तथा वर्षा की मात्रा का बहुत प्रभाव पड़ता हैं। यहॉ पर निम्न प्रकार के वन पायें जाते हैं।

- **उपोषण कटिबन्धीय वनः–** इसका विस्तार 1200 मी0 से कम ऊँचे क्षेत्रों में पाया जाता हैं। साल, कन्जू, सेमल, बेंत, बाँस, हल्दू, खैर तथा सिजू आदि हैं।
- **शतोष्ण वनः–** इसका विस्तार 1050 से 1900 मी0 हैं। चीड़ की अधिकता हैं। यहॉ कुछ वृक्ष चौड़ी पत्ती वाले पर्णपाती भी हैं।
- **उप–हिमालय या उप–एल्पाइन वनः–** 1800 से 3000 मी0 की ऊँचाई पर सिल्वर, फर, ब्लू, पाइन, स्प्रूस, साइप्रस देवदार तथा वर्च आदि मिलते हैं।
- **हिमालयी या एल्पाइन वनः–** इसमें वनों की भिन्नता मिलती हैं। ब्लू–पाइन, साइप्रस तथा सिल्वर फर देवदार वृक्ष मिलते हैं।

मिट्टियाँ

उत्तराखण्ड राज्य में मिट्टी का आवरण पतला पाया जाता हैं ऊपरी भागीरथी तथा अलकनन्दा बेसिन में मिट्टियां मिश्रित हैं। यहॉ पर हिमानीकृत तथा हिमानी–जलीय मिट्टियाँ पाई जाती हैं। गहरी जलोढ़ मिट्टी पाई जाती हैं। कत्थई मिट्टियाँ, भूरी तथा हल्की मिट्टियाँ अधिक ऊँचाई पर पायी जाती हैं। यहॉ कि मिट्टियाँ कृषि के लिये कम उपयोगी हैं। ये आलू उत्पादन के लिऐ उत्तम हैं।

पशुपालन

यहॉ की भेटियां, गुज्जर तथा गद्दी लोगो द्वारा मौसमी प्रवास अधिक प्रचलित हैं भोटिंया मूलतः चरवाहे होते हैं। बुग्याल पर्वतीय चारागाहों में भेड़, बकरी, खच्चर तथा जीबू चराते हैं।

खनिज

उत्तराखण्ड में खनिजों की कमी हैं फिर भी कुछ खनिजों की दृष्टि से सम्पन्न हैं। इस पर्वतीय क्षेत्र में जिप्सम, चूना–पत्थर, टेल्क, मैग्नेसाइट, सोपस्टोन, तॉबा, वेराइटस, डोलोमाइट, फास्फोराइट तथा संगमरमर आदि खनिजों के भण्डार हैं।

परिवहन

यहॉ की भूमि ऊबड़–खाबड़ तथा पर्वतीय हैं, अतः यहॉ पर यातायात की व्यवस्था असुविधा जनक तथा महँगी हैं। यहॉ परिवहन एवं संचार के साधनों का विकास 1962 से किया जा रहा हैं किन्तु विभिन्न क्षेत्रों में अलगाव पाया जाता हैं। ऋषिकेश से चारधाम यात्रा के लिऐ सड़क मार्ग बना हुआ हैं। देहरादून वायु यातायात से भी जुड़ा हुआ हैं, उत्तराखण्ड की राजधानी एवं व्यापारिक केन्द्र हैं। रेलयातायात भी जो भारत के कोन–कोने से जोड़ा गया हैं।

जनसंख्या

उत्तराखण्ड की सम्पूर्ण जनसंख्या वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 1,00,86,292 हैं जिसमें पुरुषों की संख्या 51,37,773 तथा स्त्रियों की संख्या 49,48,519 हैं। जनसंख्या की दृष्टि से भारत का 17वॉ बड़ा राज्य है, जो भारत की कुल जनसंख्या 1,21,05,69,573 का 0.83: हैं।

उत्तराखण्ड जनगणना–2011

	योग	पुरुष	स्त्रियाँ
जनसंख्या	1,00,86,292	51,37,773	49,48,519
साक्षरता दर (%)	78.8:	87.4:	70.0:
जनसंख्या की दशकीय प्रतिशत दर (2001–11)	18.81:	–––	–––
स्त्री–पुरुष अनुपात	963		
जनसंख्या	189		

स्रोत–सांख्यिकी पत्रिका (उत्तराखण्ड)

उत्तराखण्ड की ग्रामीण व नगरीय जनसंख्या (2011) के अनुसार क्रमशः 70,36,954 एवं 30,49,338 जिसका प्रतिशत 69.77 एवं 30.23 हैं।

2011 के जनसंख्या के धर्म आधारित जनगणना के आँकड़े

क्रम संख्या	धर्म	राज्य की कुल जनसंख्या (% में)
1.	हिन्दू	85.0
2.	मूस्लिम	11.92
3.	ईसाई	0.32
4.	सिख	2.50
5.	बौद्ध	0.1
6.	जैन	0.11
7.	अन्य	0.05
कुल जनसंख्या (धर्म)	–––	**100**

स्रोत :– 1. सांख्यिकी पत्रिका उत्तराखण्ड
2. उत्तराखण्ड समग्र अध्ययन
3. उत्तराखण्ड के पर्यटन के नए क्षितिज द्वारा प्राप्त ऑकड़े

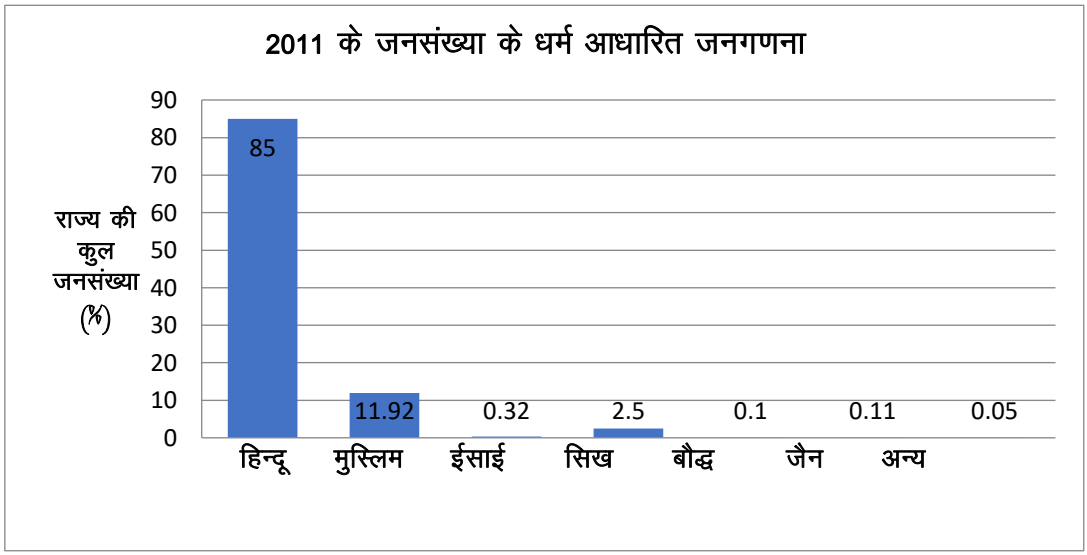

कॉर्बेट नेशनल पार्क – (गौरवपूर्ण संस्था)

'कॉर्बेट नेशनल पार्क' देश का गौरवशाली पशु विहार हैं। यह पार्क रामगंगा की पातलीदून घाटी में 525.8 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ हैं। शिवालिक पहाड़ी में यह पार्क 200 मी0 से 1100 मीटर की ऊँचाई में स्थिति हैं। कुमाँऊ के नैनीताल जनपद में और गढ़वाल के पौड़ी जनपद में यह सम्पूर्ण कॉर्बेट नेशनल पार्क विस्तार लिये हुये हैं।

दिल्ली से मुरादाबाद–काशीपुर–रामनगर होते हुए कॉर्बेट नेशनल पार्क की दूरी केवल 290 किमी0 हैं। कॉर्बेट नेशनल पार्क में पर्यटको का भ्रमण का समय नवम्बर से मई तक का होता हैं। इस मौसम में कई ट्रैवल एजेंसिया कॉर्बेट नेशनल पार्क में सैलानियों को घुमाने का प्रबंध करती हैं। कुमाऊँ विकास निगम भी प्रति शुक्रवार को दिल्ली से कॉर्बेट नेशनल पार्क तक पर्यटकों को ले जाने के लिए संचालित भ्रमणों का आयोजन करता हैं। इन भ्रमणों का आरक्षण उत्तर प्रदेश पर्यटन केन्द्र, चन्द्रलोक भवन, जनपथ नयी दिल्ली की ओर से किया जाता हैं। कुमाऊँ विकास निगम की बसों में कुशल गाइड भी होते हैं जो पशुओं की जानकारी, उनकी आदतों को बताते हुऐ करते रहते हैं। पार्क में शेर, हाथी, भालू, बाघ, सुअर, हिरन, चितल, साँभर, पाड़ा, काकड़, नीलगाय, धुरल, और चीता आदि अन्य वन्य प्राणी अधिक संख्या में मिलते हैं। यहॉ पर वन विहार में अजगर व कई प्रकार के सॉप भी निवास करते हैं। पार्क में 600 के लगभग रंगविरंगे पक्षियों की जातियॉ भी दिखाई देती हैं। आज विश्व का कोई भी ऐसा कोना नही हैं जहॉ के पर्यटक इस पार्क को देखने न आते हों।

पार्क की स्थापना

अंग्रेज वन्य जन्तुओं की रक्षा करने के भी शौकीन थे। सन् 1935 में रामगंगा के इस अंचल को वन्य पशुओं के रक्षार्थ सुरक्षित किया गया। उस समय के गवर्नर मालकम हेली के नाम पर इस पार्क का नाम 'हेली नेशनल पार्क' रखा गया था। स्वतन्त्रता के पश्चात इस पार्क का नाम 'रामगंगा नेशनल पार्क'रख दिया गया। स्वतन्त्रता के पश्चात विश्व में जिम कॉर्बेट का नाम एक प्रसिद्ध शिकारी के रूप में फैल गया था। जिम कॉर्बेट जहाँ अचूक निशानेवाज थे वहाँ वे अन्य पशुओं के प्रिय साथी भी थे।

जिम कार्बेट ने कई आदमखोर शेर से लोगों की जान बचाई थी। जिम कार्बेट ने ''द मैन ईटर ऑफ कुमाऊँ'' और ''द मैन ईटर ऑफ रूद्रप्रयाग''नामक की पुस्तकें लिखी। जिम कार्बेट को वन्य पशु–प्रेम के कारण देश–विदेश में पर्याप्त सम्मान मिला। सन् 1957 में इस पार्क का नाम 'जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क'' रख दिया था। जिम कॉर्बेट के कालाढूंगी स्थित निवास को म्यूजियम 'संग्रहालय का रुप दे दिया।

जिम कॉर्बेट : कुमाऊँ का सूपत

जिम कॉर्बेट जिनका पूरा नाम जेम्स एउवर्ड कॉर्बेट था, इनका जन्म नैनीताल में 25 जुलाई 1875 ई0 में हुआ था। यह बचपन सेही मेहनती और निडर व्यक्ति थे। उन्होनें कई काम किए थे जैसे–ड्राइवरी की स्टेशन मास्टरी की, सेना मे रहे और अन्त में ट्रान्सपोर्ट अधिकारी तक बने। जब इनको टाइम मिलता यह कुमाऊँ के वनों में घूमते थें और वन्य पशुओं को बहुत प्यार करते। जो वन्य जन्तु मनुष्य का दुश्मन हो जाता–उसे वे मार देते थे। जिम कॉर्बेट जहाँ एक कुशल शिकारी था वह शिकार करने में जहाँ दक्ष था, वही दुसरी और एक अत्यन्त प्रभावशली लेखक भी था। 'माई इंडिया' पुस्ताक बहुत चर्चित हैं। जिम कॉर्बेट के प्रति यह कुमाऊँ–गढ़वाल और भारत की सच्ची श्रद्धांजलि हैं। इस लेखक ने भारत के गौरव का भी मान बढ़ाया हैं। आज विश्व में उनका नाम प्रसिद्ध शिकारी के रुप में आदर ले लिया जाता हैं।

आज का जिम कॉर्बेट पार्क

आज यह पार्क बहुत समृद्ध हैं कि इसके अतिथि ग्रह में 200 अतिथियों को साथ ठहराने की व्यवस्था हैं। यहॉ पर सुन्दर अतिथिगृह, डाक बंगले, केबिन और टेन्ट उपलब्ध हैं खाने की सुन्दर व्यवस्था हैं।

ढिकाला में हर प्रकार की सुविधा हैं जो मुख्य गेट के अतिथि गृह में भी पर्याप्त व्यवस्था हैं। रामनगर के रेलवे स्टेशन से 12 किलोमीटर की दूरी पर 'कॉर्बेट नेशनल पार्क' का गेट हैं। यहॉ से छोटी गाड़ियों,

टैक्सियों एवं बसों से पार्क तक पहुॅचा जा सकता हैं। दिल्ली से ढ़िकाला 297 किमी हैं दिल्ली से गाजियाबाद–हापुड़–मुरादाबाद – काशीपुर–रामनगर होते हुए ढ़िकाला तक का मार्ग हैं। 8 घण्टे का समय लगता हैं।

यहाॅ पर नैनीताल स्थित कई पर्यटक एजेन्सियाँ हैं जो नवम्बर से मई तक संचालित भ्रमण कराती हैं।

- नैनीताल से कालाढुंगी–रामनगर होकर ढ़िकालाकी दूरी 118 किमी हैं।
- कॉर्बेट नेशनल पार्क नैनीताल जिले का मुख्य आकर्षण नैनीताल नगर हैं।

एक दृष्टि में

अवस्थिति	–	रामनगर नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत
निकटतम	–	रामनगर
निर्देशांक	–	29^0 32′ 55″ छ 78^0 56′ 7″ ᵮ / 29.54861^0 छ 78.93528^0 ᵮ
स्थापित	–	1936
शासी निकाय	–	1. बाघ परियोजना 2. उत्तराखण्ड सरकार 3. वन्य जीव वार्डन 4. जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान।

जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क में क्या करें और क्या न करें –

क्या करें

- कॉर्बेट टागर रिजर्व में जाने के लिए परमिट की जरुरत होती हैं तो परमिट लेकर ही प्रवेश करें।
- पर्यटकों को अन्दर जाने के लिए अपने साथ एक बैग रखना होगा जिसमें वो सारी गन्दगी डालेंगे।
- जंगली जानवर ही पार्क की असली पहचान हैं दूरी बनायें रखेंगें।
- अपने साथ रजिस्टर्ड गाइड को साथ रखें जिससे आप रास्ता भटक न जाए।
- जंगल की मधुर आवाजों को सुने।
- खाकी या हरे रंग के कपड़ों को पहने जो कि जंगल से मिलते जुले हों।
- टाइगर रिजर्व से निकलते वक्त कलियरेंस सर्टिफिकेट लेना ना भूलें।
- एक कमरे में दो बड़े और 2 बच्चों को ही रहने की अनुमति हैं।

क्या ना करें

- टाइगर रिजर्व में किसी भी तरह का ज्वलनशील पदार्थ ना लेकर जाएं।
- सूर्यास्त के बाद गाड़ी चलाना सख्त मना हैं।
- पार्क के अन्दर खाना न बनाएं।
- हार्न न बजाएं और गाड़ी का ज्यादा गति में ना चलाएं।
- पार्क के अन्दर नॉन बेज खाना ना खाएं।
- गाड़ी को बनाई हुई दिशा में ही चलाएं, इधर–उधर चलाने से पेड़ पौधों को नुकसान हो सकता हैं।

उपसंहार

जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान को बाघों के लिए स्वर्ग इसलिए कहा जाता हैं क्योंकि यहाॅ बाघों की आबादी बहुत अधिक हैं। उद्यान विभिन्न प्रजातियों के वनस्पतियों और वन्यजीवों से भी भरा हैं। इस उद्यान का नाम बाघ के दिग्गज शिकारी और बाद में प्रकृतिविद बन गए जिम कॉर्बेट (ब्रिटिश शिकारी 1875–1955) के नाम पर रखा गया हैं। ''धरती का स्वर्ग उत्तराखण्ड हैं।''

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.	उत्तराखण्ड की खोज	–	डा0 आर0 पी0 नैथानी
2.	उत्तराखण्ड समग्र अध्ययन	–	मोहन सिंह रावत
3.	उत्तराखण्ड का भूगोल	–	डॉ0 चौनियाल जी
4.	उत्तराखण्ड में पर्यटन एवं क्षितिज	–	डॉ0 हरिमोहन
5.	उत्तराखण्ड सम्पूर्ण अध्ययन	–	अशोक कुमार पाण्डेय
6.	उत्तराखण्ड समग्र अध्ययन	–	केसरी नन्दन त्रिपाठी
7.	हिमालय दर्शन	–	कृष्ण नारायण गोसाई
8.	नैट द्वारा प्राप्त आँकड़े		
9.	उत्तराखण्ड ज्ञान कोश	–	1. प्रो0 डी0 डी0 मैठाणी 2. डॉ0 गायत्री प्रसाद 3. डॉ0 राजेन्द्र नौटियाल
10.	हमारा उत्तराखण्ड	–	डॉ0 के0 सी0 पुरोहित
11.	गजेटियर वॉल्यूम	–	पी0 एन0 डब्ल्यू

❖◆❖